काठमाण्डु। नेपाल के उप राष्ट्रपति महामहिम परमानंद झा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.राज।

लखनऊ। उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महामहिम बी.एल.जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.राधा।

आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

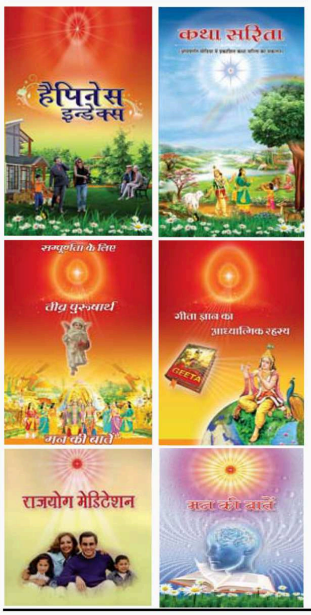

प्रश्न : मैं बचपन से ही श्रीमद्भगवतगीता पढ़ती आई हूँ। तीसरे अध्याय के कुछ श्लोक जिसमें कहा गया है कि काम सभी पापों का मूल है, काम महाशत्रु है व काम-क्रोध-लोभ नर्क के द्वार हैं। इनका सही अर्थ क्या है तथा इस समझ को जीवन में कैसे धारण करें? कृपया इसका स्पष्टीकरण करें।

उत्तर : गीता के व्याख्याकारों ने काम का अर्थ कामना करके उसके यथार्थ अर्थ को लोप कर दिया। यद्यपि काम का अर्थ कामना भी है परन्तु यहाँ इसका अर्थ काम वासना ही है। वास्तव में काम वासना ही सभी पापों का मूल है न कि कामनाएँ। कामनाएँ तो श्रेष्ठ भी होती हैं व साधारण भी होती हैं।

ये काम वासना ही आत्मा की महान शत्रु भी हैं व उसे नर्क में भी ले जाने वाली है। इसी काम से अन्य सभी विकार भी उत्पन्न होते हैं। क्यों है काम महावैरी? क्योंकि आत्मा मूल रूप से पवित्र है, कामवासना सम्पूर्णत: अपवित्रता है।

आज आप चारो ओर देख सकते हैं कि अनेक युवक व मनुष्य कामवश पाप कर रहे हैं। ये वासना अनेक युवकों को अशान्त, दु:खी व तनावग्रस्त कर रही है। क्योंकि ये दैहिक प्यार है, इससे देह अभिमान बढ़ता है, मनुष्य की दृष्टि, वृत्ति व स्मृति दूषित हो जाती है, उसका विवेक भी नष्ट हो जाता है तथा वह पाप पुण्य में भेद नहीं कर पाता। ये वासना मन को मलीन कर देती है और मलीन मन पाप में प्रवृत्त होता है।

अब स्वयं भगवान इस धरा से इन विकारों को नष्ट कराकर पवित्रता का दैवी स्वराज्य स्थापित करने आये हैं। उन्होंने तो आदेश ही दिया है कि अब इस काम महाशत्रु को जीतो, पवित्र बनो। अनेक आत्माओं ने इस महावैरी को जीत कर पवित्रता का मार्ग अपना लिया है और इसी से वे पुण्यात्मा बन गये हैं।

प्रश्न : जब मैं अपने बच्चों को गीता पढ़ने को कहती हूँ तो वे मेरा मज़ाक बनाते हैं, उन्हें गीता के बारे में ज्ञान नहीं है। तब भला गीता के भगवान को कैसे सिद्ध करें?

उत्तर : यह सत्य है कि गीता ज्ञान तो कलियुग के अन्धकार में लोप ही हो गया है। नई पीढ़ी को तो इसके बारे में कुछ भी पता नहीं। धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमने शिक्षा से भी प्राय: इसे मुक्त ही कर दिया है। जबकि गीता-ज्ञान तो सभी धर्म वालों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। प्रत्येक धर्मावलम्बी इस ज्ञान से अपने सत्य धर्म पर चल सकता है। इसमें आत्मा का अर्थात् रूह का ज्ञान है जिससे हर मनुष्य को सच्ची शान्ति मिलती है व पवित्रता उसके जीवन में आती है।

गीता ज्ञान अति गुह्य होने के कारण यह सबकी समझ से परे है। बच्चे या अन्य कोई इसका पाठ तो कर सकता है परन्तु उसे हृदयंगम नहीं कर सकता। इसलिए हमारे पास जो ईश्वरीय ज्ञान है, उसके माध्यम से गीताज्ञान को सरल करके समझायें।

गीता के भगवान को तो हमें सिद्ध व प्रत्यक्ष करना ही है। सब रूहों को उनसे जोड़ना है व उन्हें मुक्ति व जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाना है। जैसे-जैसे गीता ज्ञान हमारे जीवन में आता जाएगा, हम गीता के भगवान को प्रत्यक्ष करने में सफल हो जाएंगे।

प्रश्न : मुक्ति के बारे में हमारे दर्शनों में दो भिन्न-भिन्न मतें हैं। कुछ आचार्य मानते हैं कि मुक्ति में आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है।

मन की बातें
- ब्र.कु.सूर्य

कुछ मानते हैं कि मुक्ति में आत्मा परमात्मा के सानिध्य में रहती है। कुछ मानते हैं कि आत्मा को मुक्ति के बाद लौट आना पड़ता है तो कुछ कहते हैं, नहीं। कुछ की मान्यता है कि मुक्ति में परमानन्द है और कुछ कहते हैं, नहीं। ईश्वरीय मत क्या कहती है?

उत्तर : आत्मा को मुक्ति की इच्छा होती है। इसका अर्थ है कि वह कभी मुक्ति में थी। उसने मुक्ति का अनुभव किया है। इससे स्पष्ट है कि मुक्ति की प्रारब्ध पूर्ण होने पर आत्मा पुन: पुनर्जन्म में आती है।

आत्मा परम आत्मा में लीन नहीं होती। दोनों ही अजर अमर अविनाशी हैं। आत्मा यदि लीन हो जाए तो मानो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। परन्तु ऐसा नहीं होता। मुक्ति में आत्मा मुक्तिधाम में रहती है। परमात्मा के समीप रहती है। वहाँ आत्मा गहन शान्ति में रहती है परन्तु शान्ति की अनुभूति उसे नहीं होती क्योंकि वहाँ आत्मा देह रहित है, इसलिए उसकी मन बुद्धि जागृत नहीं होती। कुछ आचार्यों की जो ये मान्यता है कि आत्मा मुक्ति में परमानन्द में रहती है, यह अनुभव सूक्ष्मवतन का है। मुक्तिधाम में जाने से पूर्व आत्मा कुछ समय सूक्ष्म लोक में रहती है। वहाँ क्योंकि आत्मा सूक्ष्म शरीर में रहती है, इसलिए वहाँ परम आनन्द है। कुछ मुनियों ने इसे ही मुक्ति मान लिया। परन्तु नहीं, मुक्ति इससे परे है।

प्रश्न : मुक्ति क्या है? यह किसे प्राप्त होती है, क्या अब तक कुछ आत्माएँ मुक्त हुई हैं? मुक्ति पाने के लिए क्या सन्यास की जरूरत है? स्पष्ट करें कि मुक्ति कैसे मिले व ऐसी आत्माओं के यहाँ क्या लक्षण होंगे?

उत्तर : आत्माओं का धाम सूर्य चाँद तारों से भी परे ब्रह्म लोक है। इस धरा पर आने से पूर्व सभी आत्माएँ वहीं वास करती थीं। वहां की स्थिति आत्माओं की सम्पूर्ण स्थिति है। वहाँ से अपने-अपने समय पर आत्माएँ इस धरा पर अपना-अपना पार्ट बजाने आती हैं। सभी आत्माएँ एक साथ नहीं आती। सतयुग के प्रारम्भ में कम आत्माएँ आती हैं व कलियुग में सभी आत्माएँ नीचे उतर आती हैं। प्रत्येक आत्मा को सतोप्रधान, सतो, रजो व तमो इन चार स्थितियों से गुजरना पड़ता है। रजो व तमो में पहुंचने पर आत्माएँ विकारों के वश हो जाती हैं व पाप कर्म करने लगती हैं। इसलिए किसी को पुण्यात्मा व किसी को पापात्मा कहा जाता है।

कलियुग के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते आत्माएँ विकारों के व विकर्मों के पूर्णत: अधीन हो जाती हैं। यह आत्मा की बन्धन युक्त स्थिति होती है। इसमें ही वह दु:खी होती है व मुक्ति की कामना करती है।

मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है, इसलिए उसे मुक्तिदाता कहते हैं। बन्धन में आत्मा विकारों व विकर्मों के कारण आई इसलिए ज्ञान के सागर परमात्मा आकर आत्माओं को सत्य ज्ञान देकर स्मृति स्वरूप बनाते हैं। वे राजयोग सिखाते हैं। राजयोग के बल से व स्मृति स्वरूप होने से आत्माएँ विकारों से मुक्त होने लगती हैं व योग अग्नि से उनके संचित विकर्म नष्ट होने लगते हैं और अभ्यास करते करते आत्माएँ सम्पूर्ण पावन बनकर मुक्तिधाम में मुक्त अवस्था में लौट जाती हैं। मुक्तिधाम का गेट केवल एक बार विनाश के बाद ही खुलता है। क्योंकि तब सबको ही मुक्तिधाम जाना होता है। इससे पूर्व कोई वहाँ नहीं जा सकता।

मुक्ति के लिए सन्यास की आवश्यकता नहीं, विकारों के सन्यास की आवश्यकता है। मुक्त अवस्था के नजदीक पहुँची आत्मा सभी विकारों से मुक्त होती जाएगी। उसका चित्त निर्मल, मन शीतल व व्यवहार पवित्र होता जाएगा।

समर्पित

-पेज 5 का शेष

मेरा मन लौकिक रिश्तेदारों की तरफ से हट चुका था।

10 जून 2010 को मुझे बाबा ने टीचर्स ट्रेनिंग करने का सुअवसर प्राप्त कराया। मेरी टालने की आदत पक्की थी, इस कारण मैंने ना करनी चाही फिर अचानक पता नहीं क्या हुआ मैंने इस ट्रेनिंग को अटेन्ड करने का मन बना लिया।

जब मैं ट्रेनिंग के लिए मधुबन पहुंची तो मेरे भाग्य के क्या कहने, बाबा ने बाहें खोलकर मेरा स्वागत किया। अभी तक मैंने सात दिन का कोर्स सम्पूर्ण रीति से नहीं किया था परन्तु आदरणीय उषा दीदी जी ने जैसे-जैसे सात दिन का कोर्स कराना शुरू किया, बुद्धि को सब समझ में आने लगा, गुह्य राज़ खुलने लगे, बुद्धि साफ होती गई और मुझे अपना लक्ष्य साफ दिखाई दिया कि यदि मुझे जीवन को मूल्यवान बनाना है तो समर्पित जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है। ट्रेनिंग समाप्त होने के बाद माता जी की राय तथा दादी रतनमोहिनी जी के निर्देशानुसार दिल्ली में जो ओम शांति रिट्रीट सेन्टर है वहां पर मुझे सेवार्थ भेजने का निर्णय लिया गया। आशा दीदी जी से बात की गई और उन्होंने मुझे अपने परिवार का हिस्सा बनाने के लिए सहमति दी और 14 जुलाई 2010 को मैं अपने अलौकिक व पारलौकिक पिता के घर पहुंची। पहुंचते ही मेरा बहुत खुले दिल से स्वागत हुआ। उसी वर्ष मुझे बापदादा से स्टेज पर मिलने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। 2011 में भी दूसरा स्वर्णिम अवसर मिला बापदादा से मिलने का। मेरे भाग्य के क्या कहने जितनी सराहना करुं उतना कम है।

अभी इस समर्पित जीवन में चलते हुए तीन वर्ष हुए हैं। दिनों दिन अतिन्द्रिय सुख में वृद्धि तथा बाबा पर निश्चय बढ़ता ही जा रहा है। वह मुझे एक राजकुमारी की तरह पालना दे रहा है। मुझे महसूस होता है कि उसने मुझे प्यार की गोद में ऐसा बिठाया है कि मैं उतरना भी चाहूं तो वह मुझे उतरने नहीं देता है। अंत में मैं यही कहूंगी कि पाना था वो पा लिया अब कुछ भी पाना बाकी न रहा।

शिवली (रूरा)। चेयरमेन लल्लन बाजपेयी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.प्रेम साथ हैं ब्र.कु.विमलेश।

नैनवा (बूंदी)। स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.जमीला, ब्र.कु.रजनी तथा समाजसेवी पुखराज ओसवाल।